

## आईसीएआर-निनफेट ने बिछुआ फाइबर की रेटिंग, ब्लीचिंग और रंगाई पर एफएलडी सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया

आईसीएआर-नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ नेचुरल फाइबर इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (एनआईएनएफईटी), कोलकाता ने 12वीं से 17वीं के दौरान ग्रामीण उद्यम त्वरण परियोजना (आरईएपी), रानीखेत के सहयोग से "माइक्रोबियल रेटिंग, और नेटल फाइबर की ब्लीचिंग और रंगाई" पर एक एफएलडी सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। जून 2023, रानीखेत जिले के ताड़ीखेत, अल्मोडा, उत्तराखंड में। आईसीएआर-निनफेट से, डॉ. ए.एन. राँय, डॉ. अतुल सिंघा और डॉ. के.के. सामंता, आरईएपी के परियोजना प्रबंधक श्री राजेश मठपाल के साथ कार्यक्रम का समन्वय करते हैं। अच्छी गुणवत्ता वाले फाइबर निकालने के लिए बिछुआ पौधे, सूखे और हरे रिबन की माइक्रोबियल रेटिंग को प्रदर्शित करने के लिए ऑन-साइट एफएलडी का आयोजन किया गया था। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अतुल सिंघा पौधे/रिबन की सड़न के लिए आवश्यक दिनों की संख्या और माइक्रोबियल कल्चर खुराक का वर्णन करते हैं। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ए.एन. राँय ने उल्लेख किया कि बिछुआ वस्त्रों में उपयोग के लिए आशाजनक रेशों में से एक है। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि आईसीएआर-एनआईएनएफईटी नेटल फाइबर की संपूर्ण मूल्य-श्रृंखला पर काम कर रहा है, यानी फाइबर निष्कर्षण, रेटिंग, यार्न बनाना, कपड़े बनाना, रंगाई, उत्पाद विकास और बायोडिग्रेडेबिलिटी अध्ययन से शुरू होता है। संस्थान ने कई परिधान उत्पाद (शॉल और पुरुष एवं महिलाओं के परिधान) और हस्तशिल्प वस्तुएं (राखी और आभूषण) विकसित किए हैं। ऐसे मूल्यवर्धित उत्पादों को विकसित करने के लिए, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. के.के. सामंता द्वारा गांव की महिलाओं को अलग-अलग धोने योग्य रंगों का उपयोग करके बिछुआ फाइबर की ब्लीचिंग और रंगाई पर व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। इसके अलावा, बिछुआ फाइबर से ब्रैड बनाने के बाद उसकी ब्लीचिंग और रंगाई का प्रारंभिक प्रशिक्षण भी दिया गया।

आरईएपी के परियोजना प्रबंधक श्री राजेश मठपाल ने कहा, अल्मोडा और अन्य जिलों में बहुत सारे बिछुआ फाइबर उपलब्ध हैं जिन्हें उत्पादों के विकास के लिए निकाला जा सकता है। अल्मोरा जिले के सीडीओ श्री अंशुल सिंह (आईएस) के साथ एक बैठक भी आयोजित की गई और बिछुआ फाइबर से विकसित किए जाने वाले संभावित उत्पादों पर चर्चा की गई। उन्होंने यह भी उल्लेख किया, उत्तराखंड में बड़ी मात्रा में बिच्छू बूटी के पौधे उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग किसानों, स्थानीय लोगों और उद्यमियों के लाभ के लिए विभिन्न मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने के लिए किया जा सकता है। फाइबर निष्कर्षण, प्रसंस्करण और उत्पाद विकास के क्षेत्र में आईसीएआर-निनफेट के साथ भविष्य के कार्य पर भी चर्चा की गई। आने वाले महीनों में ताड़ीखेत में हस्तशिल्प वस्तुओं पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा सकता है।

## **ICAR-NINFET organized FLD cum Training Programme on Retting, and Bleaching & Dyeing of Nettle Fibre**

ICAR-National Institute of Natural Fibre Engineering and Technology (NINFET), Kolkata organized a FLD cum training programme on “**Microbial retting, and Bleaching & Dyeing of Nettle fibre**” in collaboration with Rural Enterprise Acceleration Project (REAP), Ranikhet during 12<sup>th</sup> to 17<sup>th</sup> June 2023 at Tarikhet in Ranikhet district, Almora, Uttarakhand. From ICAR-NINFET, Dr. A. N. Roy, Dr. Atul Singha and Dr. K. K. Samanta coordinate the programme along with Shri Rajesh Mathpal, Project manager from REAP. On-site FLD was organized to demonstrate the microbial retting of nettle plant, dry & green ribbon to extract good quality fibre. Dr. Atul Singha, senior scientist describes the number of days and microbial culture dosage required for retting of plant/ribbon. Dr. A. N. Roy, principal scientist mentioned that nettle is one of the promising fibres for applications in textiles. He also highlighted that ICAR-NINFET is working on nettle fibre complete value-chain i.e., starting from fibre extraction, retting, yarn making, fabric making, colouration, product development and biodegradability study. The institute has developed several apparel products (shawl and male & women wears) and handicraft items (Rakhi and jewellery). For developing such value-added products, a hands-on-training on bleaching and dyeing of nettle fibre using different wash-durable colours was also provided to the village women by Dr. K. K. Samanta, senior scientist. In addition, a preliminary training was also provided on how to make braids from nettle fibre followed by its bleaching and dyeing.

Shri Rajesh Mathpal, project manager from REAP mentioned, lot of nettle fibre is available in Almora and other districts that can be extracted for products development. A meeting was also arranged with Sri Ansul Singh (IAS), CDO of Almorah District and discussed the possible products to be developed from nettle fibre. He also mentioned, a large quantity of nettle plant is available in Uttarakhand, which can be used for making different value-added products for the benefit of farmer, local people and entrepreneur. The future line of work with ICAR-NINFET in the area of fibre extraction, processing and products development was also discussed. A training programme on handicraft items may be arranged at Tarikhet in the coming months.

कार्यक्रम की झलकियाँ/ Glimpses of the programme:

